यूराशिया तरङ्ग

वर्ष ५, अंक १०, जनवरी २०१२

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी द्वारा समय-समय पर प्रदान किए गए मार्गनिर्देशन

- मनुष्य के रूप में जन्म लेकर नहीं आने पर न तो बुद्ध बन सकते हैं और ना ही बोधिसत्व। इसलिए मनुष्य के रूप में जन्म देने वाले मानव जीवन के श्रोत अभिभावकों के प्रति हमे कृतज्ञ होना जरूरी है।
- मानव जीवन के श्रोत के रूप में रहने वाले पूर्वजों को केन्द्र विन्दु बनाकर जीवनयापन करने का मौका प्राप्त करने वाले हमलोग हैं।
- अभिभावक और पैसा हमेशा साथ नहीं रहते, इस बात को ध्यान में रखना होगा।
- जानवरों के भी पूर्वज होते हैं, लेकिन उनको पूर्वजों के अस्तित्व का पता नहीं होता। मनुष्य भी यदि पूर्वजों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता तो वह जानवर की तरह ही होता है।
- पूर्वजों की स्थिति में परिवर्तन होने पर अपने घर की स्थिति में भी परिवर्तन होता जाता है।
- रेयूकाई की शिक्षा स्वयं अपने द्वारा कार्यान्वयन में उतारनी है, अपने कर्म के सम्बन्ध को स्वयं बचाने का मौका प्राप्त करना है।
- रेयूकाई का आधार कृतज्ञता है।
- अपनी संतति दुःखी रहे, ऐसा पूर्वज कभी सोंच नहीं सकते।
- अपने मुंह से बोले गए शब्द दुःखी और सुखी बना सकते हैं।
- आप कंजूस हैं या आलसी हैं, यह बात स्वयं पता नहीं चल सकता और इसे स्वीकार भी नहीं कर सकते लेकिन औरों को पता रहता है।
- अपने देश को बचाने के लिए अपने चरित्र में परिवर्तन लाना और महान् रेयूकाई शिक्षा का दैनिक कार्यान्वयन कर लोगों का मन परिवर्तन कराना ही हम सभी का मुख्य कार्य है।
- एक-एक जन की अंतरात्मा का विकास करते जाने का काम यूराशिया रेयूकाई का है।
- मिचिबिकी नहीं करने वाला मनुष्य मनुष्य ही नहीं है, कहने का मतलब दूसरे व्यक्ति के सुख की कामना नहीं करने वाला व्यक्ति मनुष्य ही नहीं है, ऐसा कहा गया है।
- हम औरों को और स्वयं को झुका लिए लेकिन अपनी आत्मा और आध्यात्मिक संसार को झुका नहीं सके।
- दुःखी हुई आत्मा को खुशहाल बनाने वाला और कर्म के सम्बन्ध को बचाने वाला व्यक्ति ही लोकहितकारी बोधिसत्व है।
- इस संसार में यदि महिलाएं आपस में एकजुट हो गयीं तो तुरंत विश्वशांति कायम होगी।
- प्रातः आशा लेकर जगें, दिन में प्रफुल्लित होकर प्रयास करते हुए जीवनयापन करें और रात को कृतज्ञ होकर सोने जाएं।
- औरों के मन के द्वार को खोलने के लिए और मन के संसार को खोलने के लिए मुस्कान महत्वपूर्ण होता है।
- मुस्कान का दान कर, मुस्कानयुक्त चेहरे और शब्दों का प्रयोग कर, औरों की प्रशंसा करने वाली वाणी का व्यवहार करना पड़ेगा।
- अन्य लोगों से सुझाव, मार्गनिर्देशन प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन कार्यान्वयन में तो स्वयं को ही उतारना होगा और परिणाम स्वयं दिखाई देगा।
- आंखों से दिखाई नहीं पड़ने वाले स्थान से सीख कर अपना भाग्य स्वयं खोलना पड़ता है।

यूराशिया रेयूकाई का संक्षिप्त परिचय

रेयूकाई के संस्थापकद्वय महागुरू काकुतारो कुबो जी एवं किमी कोतानी जी ने सन् १९२० में जापान देश में रेयूकाई शिक्षा का प्रतिपादन किया था। रेयूकाई शिक्षा बुद्ध द्वारा उपदेशित सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र की भावनाओं पर आधारित है। रेयूकाई का शाब्दिक अर्थ " आध्यात्मिक बंधुत्व का समाज " होता है। रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने वाले व्यक्ति आध्यात्मिक संसार के प्रति विश्वास कर स्वयं को इस संसार में जन्म देने वाले मानव जीवन के श्रोत माता-पिता सहित पीढ़ी दर पीढ़ी के पूर्वजों का दैनिक स्मरण करते हैं।

महान रेयूकाई शिक्षा का प्रतिपादन होकर अभ्यास करते जाने के क्रम में सन् १९३० में जापान देश में रेयूकाई संस्था की विधिवत् स्थापना हुई। उसके बाद रेयूकाई शिक्षा को सन् १९७७ में हमारे यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी श्री युशुन मासुनागा सर्वप्रथम भारत देश में ले आए। फिलहाल भारत सहित यूराशिया महाद्वीप के अन्य देश - नेपाल, बांग्लादेश और म्यानमार में भी इस महान् रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने का मौका प्राप्त हुआ है।

रेयूकाई का मुख्य उद्देश्य विश्वशांति में योगदान देने वाले ज्यादा से ज्यादा व्यक्तियों का निर्माण करना है। संस्थापक जी ने मनुष्य के जीवनयापन करने का तरीका सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र की भावनाओं के अनुरूप लागू करने पर अपने और अपने परिवार का जीवनयापन अच्छी तरह से होने के साथ-साथ समाज की भी उन्नति करते जाने की बात में कोई दो-मत नहीं है, ऐसा विश्वास के साथ कहा करते हैं। इस रेयूकाई शिक्षा को साधारण मनुष्य भी दैनिक जीवन में लागू कर सकते हैं। रेयूकाई में प्रवेश कर चुके सदस्य भी स्वयं ओया होकर अपनी समान भावना वाले लोगों को प्रवेश करा सकते हैं। प्रवेश लेने के बाद तीन प्रमुख स्तंभ- पूर्वज स्मरण, कार्मिक सम्बन्धों का शुद्धिकरण और प्रायश्चित अभ्यास में लगना होता है।

गुजरे हुए पूर्वजों का सोकाइम्यो घर में विराजमान कराकर दैनिक पानी चढ़ाकर सूत्रपाठ के माध्यम से पूर्वजों की आत्मा को बचाने का कार्य करना ही पूर्वज-स्मरण है। जन्म लेने के साथ ही हमारे पूर्वजों के कर्म का सम्बन्ध भी अपने साथ-साथ आने के कारण अच्छे कर्म के सम्बन्धों का विस्तार करते जाना एवं बुरे कर्म के सम्बन्धों को स्वयं हटाकर संतति में जाने न देने के लिए किए जाने वाले कार्य ही कार्मिक सम्बन्धों का शुद्धिकरण है। हमें स्वयं द्वारा हुई गलतियों को महसूस कर क्षमा मांगना ही प्रायश्चित अभ्यास है। इस प्रकार रेयूकाई के तीन स्तंभों का कार्यान्वयन कर अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं, ऐसा विश्वास करते हैं। रेयूकाई में प्रवेश किए सदस्यों द्वारा सोकाइम्यो की स्थापना कर दैनिक पानी चढ़ाकर सूत्रपाठ कर पूर्वज स्मरण का कार्य किए जाने को मिचिबिकी कहते हैं। रेयूकाई किसी धर्म या राजनीति से संबंधित नहीं है। कोई भी धर्म मानने वाले और किसी भी राजनैतिक विचारधारा वाले लोग भी पूर्वज रहने के कारण रेयूकाई का सदस्य बनकर अभ्यास कर सकते है।

यूराशिया रेयूकाई समय-समय पर रेयूकाई शिक्षा प्रसार के अतिरिक्त प्रशिक्षण और स्वास्थ्य शिविरों का संचालन करती आ रही है। जैसे दक्षतामूलक प्रशिक्षण, साफ-सफाई, प्राकृतिक आपदा के समय उद्धार-कार्य, निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, एम्बुलेन्स परिसेवा, भाषा कक्षा आदि उनमें प्रमुख है। रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास के माध्यम से अपने घर-परिवार को सुखी और आनंदमय बनाकर समाज व देश सहित विश्वशांति में योगदान पहुंचाया जा सकता है, ऐसा हमारा विश्वास है।

अंतर्राष्ट्रीय वक्तृत्वकला पर्व - २०११

यूराशिया रेयूकाई के आयोजन में विश्व के समसामायिक विषयों में युवकों की भूमिका के सम्बन्ध में 'जलवायु परिवर्तन और मानव समाज का अस्तित्व', 'देश के प्रति युवकों का दायित्व 'और' अपने देश में जन्म लेने के लिए गर्व करें' - इन तीन विषयों पर वक्तृत्वकला के माध्यम से अपनी-अपनी भावनाएं विगत ४ सितम्बर २०११ के दिन भारत देश के वाराणसी शहर में अंतर्राष्ट्रीय वक्तृत्वकला पर्व - २०११ सम्पन्न हुआ। यूराशिया महाद्वीप के चार देश- भारत, नेपाल, बांग्लादेश तथा म्यानमार से चुनकर आए प्रतियोगी और सहभागियों सहित इस समारोह में कुल ६७१ लोगों की उपस्थिति थी। यूराशिया रेयूकाई की संस्थापक अध्यक्ष दम्पती द्वारा पानस में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन होने वाले उक्त पर्व का प्रमुख आतिथ्य वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० पतंजली मिश्रा ने किया था।

देश के अनुसार सम्पन्न उक्त वक्तृत्वकला प्रतियोगिता में उत्कृष्ट वक्तव्य पेश कर प्रथम स्थान हासिल कर चुनकर आए प्रतियोगी सहभागियों में क्रमशः भारत से श्री मनोहर शर्मा, नेपाल से श्री जीवन ढुंगाना, म्यानमार से सुश्री क्यू थंडर विन एवं बांग्लादेश से श्री हिरक देव राय के प्रतिनिधि के रूप में श्री चिन्मय राय ने अपने-अपने विषय पर उनके विचारों को अनुवादित कर प्रस्तुत किया। यूराशिया रेयूकाई द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संपन्न उक्त पर्व के संयोजक श्री उदय चन्द्र अधिकारी थे।

जापान भ्रमण अभ्यास कार्यक्रम

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी से मौका प्राप्त कर इस बार यूराशिया रेयूकाई की मिहाता के नेतृत्व में विगत ११ अक्टूबर २०११ से २२ अक्टूबर २०११ तक यूराशिया रेयूकाई भारत देश से २० जन, नेपाल देश से २ जन, कुल मिलाकर २२ सदस्यीय यूराशिया रेयूकाई के शिबुचोगण को जापान भ्रमण अभ्यास में जाने का मौका प्राप्त किया।

जापान भ्रमण अभ्यास के क्रम में रेयूकाई प्रधान कार्यालय के भवन-संरक्षक देव का अभिवादन और दोनों महागुरू जी लोगों की जीवनी के बारे में अवलोकन करने का मौका प्राप्त करने के साथ ही द्वय महागुरू जी, द्वय गुरू जी एवं मुमा एई होऊ तोकु जेन न्यो जी के समाधि - स्थल में जाकर अभिवादन करने का उन्हे मौका प्राप्त हुआ। जापान के कोमिनातो स्थित महागुरू काकुतारो कुबो जी का जन्म-गृह, निचिरेन जी का जन्म-स्थल, निचिरेन जी का अभ्यास-स्थल आदि में जाने के साथ ही १५ अक्टूबर २०११ के दिन रेयूकाई मिरोकुशान में आयोजित भव्य समारोह में सहभागी होने का मौका भी उन्हे प्राप्त हुआ। १८ अक्टूबर २०११ के दिन ओया शाखा रेयूकाई ८वीं शाखा की मिहाता ग्रहण करने के ६०वें वर्ष के साधारण मिलन समारोह में ८वीं शाखा हाविकिनो हाल, ओसाका में सहभागी होने का मौका भी उन्हे प्राप्त हुआ।

भ्रमण क्रम में जापान देश के टोक्यो एवं ओसाका, कोबे शहर में विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों में जाकर अध्ययन एवं अवलोकन करने एवं सीखने का मौका पाकर एवं विभिन्न बातों की जानकारी प्राप्त कर अपने क्षेत्र में लौटकर किन-किन बातों का क्रियान्वयन करना हमे जरूरी है, सभी सहभागी उसे महसूस करते हुए उत्साहपूर्वक लौटे।

म्योईचिकाई (बाल-बालिका का भव्य मिलन कार्यक्रम) की शुरूआत

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी ने यूराशिया रेयूकाई का भव्य मिलन १८ नवम्बर २०११ के दिन बाल-बालिकाओं के लिए खुशियाली का दरवाजा खोल दिया गया। यूराशिया रेयूकाई की आठ अदद मिहाता शाखाओं से चुन कर आए दो जन बालक एवं बालिका को उपस्थित कराकर (म्योईचिकाई) गीत का भी शुभारंभ हुआ। महान् रेयूकाई शिक्षा युवा-युवती, महिला-पुरूष, वृद्ध-वृद्धाओं के लिए ही मात्र न होकर, बालक-बालिकाओं के लिए भी उतना ही आवश्यक है, इस बात को महसूस करते हुए मानव-जीवन के श्रोत माता-पिता के प्रति कृतज्ञ रहने एवं कच्ची आयु से ही शिष्टता और मैनर सिखाना रेयूकाई का उद्देश्य रहा है। संस्थापक अध्यक्ष जी के मार्गनिर्देशन के अनुसार शाक्यमुनि बुद्ध के जन्म दिन को प्रत्येक मिहाता शाखा और संस्कृति केन्द्रों मे म्योइचिकाई का मिलन आयोजित कर बधाई और अपील का आदान-प्रदान कराते जाना पड़ेगा, ऐसी बातों को लागू करने और कराने का मौका प्राप्त करेंगे।

व्यक्तिगत अनुभव .....

मेरा नाम पार्वती श्रेष्ठ है। मेरा घर नेपाल के मोरंग जिले में पड़ता है। मैं फिलहाल ललितपुर जिला के कुसुन्ती में रहती हूँ। मुझे रेयूकाई में प्रवेश कराने वाले मेरे मिचिबिकी ओया सुधा गजुरेल जी हैं। मैं ६ सितम्बर २००८ के दिन रेयूकाई संस्था में प्रवेश करने का मौका पायी हूँ। मुझे कक्षा छह में पढ़ने के दौरान, स्कूल में नृत्य और वक्तृत्वकला प्रतियोगिता का कार्यक्रम है, रेयूकाई में जाना पड़ेगा, ऐसा मेरे सर ने कहा था। प्रतियोगिता के लिए मेरे साथ मेरे साथी भी रेयूकाई कार्यालय में गए। वहां जाकर मुझे अनूठा अनुभव मिला। क्यों कि, वहां मुझसे भी वरिष्ठ लोगों ने हमे मुस्कान के साथ नमस्कार कर स्वागत किया। यह स्वरूप देखकर मुझे काफी आश्चर्य हुआ और क्यों हम छोटे लोगों को इन लोगों ने नमस्कार किया, यह सोचने लग गयी। बाद में समझ सकी कि परस्पर आत्मीय सम्बन्ध बढ़ाने के लिए इस प्रकार नमस्कार किया होगा। उस दिन पता चला कि रेयूकाई विश्वशांति और पूर्वज स्मरण करने वाली संस्था है, ऐसा ज्ञात हुआ। प्रतियोगिता कार्यक्रम समाप्त होने के बाद रेयूकाई का सदस्य बनने की इच्छा हुई, फिर भी विद्यार्थी जीवन होने के कारण और मेरे पास पैसे नहीं रहने के कारण सदस्य नहीं बन सकी, जिसके लिए मन में काफी दुःख हुआ और मन ही मन पिता-माता द्वारा दिए गए टिफिन के पैसे बचाकर किसी दिन अवश्य सदस्य बनूंगी, ऐसा प्रण लेकर वापस घर लौटी।

पढ़ाई के साथ-साथ समय गुजरता गया। मुझे बार-बार रेयूकाई कार्यालय में जाने पर अच्छा लगता था। लेकिन मेरे घर से रेयूकाई कार्यालय दूर रहने के कारण मैं जा नहीं पाती थी। एक दिन मेरे घर के नजदीक रहनेवाली दीदी के साथ मेरा परिचय हुआ। सामान्य परिचय तो पहले से ही था, लेकिन उस दिन यह पता चला कि उनके श्रीमान् रेयूकाई संस्था में काम करते हैं। मैं अनेक दिनों से संस्था के किसी व्यक्ति की तलाश कर कही थी, जो आज घर के नजदीक ही मिल गया, इससे मैं काफी खुश हुई। मुझे रेयूकाई का सदस्य बनने के लिए क्या करना पड़ेगा ? मुझे भी सदस्य बनने की इच्छा है, ऐसा कही। उन्होंने कहा कि घर में जाकर बात करें। हमे घर में ले जाकर गोहोजा दिखाकर रेयूकाई के बारे में सभी बातें बतायी और घर-परिवार से मेरा परिचय कराया। मैं उसी दिन सदस्यता हेतु आवेदन कर खुशी-खुशी घर लौटी।

सदस्य बनने के बाद ओया के साथ-साथ प्रत्येक महीने की ६ एवं १८ तारीख को यूराशिया रेयूकाई ११वीं शाखा के मुख्य कार्यालय में होने वाले मासिक मिलनों में नियमित जाने लगी। इसी क्रम में रेयूकाई की व्यवहारिक शिक्षा को सीखने का भी मौका प्राप्त की। रेयूकाई में मुझे सबसे ज्यादा अच्छी लगने वाली बातों 'मुस्कान के साथ नमस्कार करना' एवं 'क्षमा करें' कहना और 'धन्यवाद व्यक्त करना' हैं। इस संस्था में पूर्वज स्मरण करने के लिए लड़के-लड़कियों को समान रूप में अवसर दिए जाने के प्रति भी मैं काफी प्रभावित हुई।

रेयूकाई शिक्षा में लगकर पूर्वजों के प्रतीक (सोकाइम्यो) की स्थापना कर दैनिक रूप में पूर्वजों को पानी चढ़ाकर सूत्रपाठ कर पूर्वज-स्मरण करने का अवसर प्राप्त कर रही हूँ। इसी क्रम में स्वयं भी सदस्य बनाकर उन्हे भी रेयूकाई शिक्षा के बारे में जानकारी कराते हुए मिलनों में उन्हे साथ लेकर जाती हूँ। रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करते जाने के क्रम में गत वर्ष स्थिरमति पहाड़ में लीडर्स अभ्यास कार्यक्रम में सहभागी होने का मौका पाकर रेयूकाई शिक्षा को और नजदीक से समझने का मौका पायी। उक्त अभ्यास कार्यक्रम से लौटने के बाद और उत्साह के साथ क्रियाशील होकर मिचिबिकी करने और मिचिबिकी किए सदस्यों के घर में पूर्वजों को केन्द्र विन्दु बनाकर जीवनयापन कराने के लिए सोकाइम्यो की स्थापना करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ।

रेयूकाई संस्था में प्रवेश करने के पश्चात् हाल तक मेरे जीवन में अनेकों सकारात्मक परिवर्तन आ चुके हैं। दैनिक जीवनयापन के क्रम में मिले हुए व्यक्ति और स्वयं कार्य करने का मौका प्राप्त किए कार्यक्षेत्रों में दैनिक मुस्कान को लागू कर कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। फिलहाल मेरे व्यवहार और कार्यशैली को देखकर आस-पास के पड़ोसी कहते हैं कि पहले की पार्वती और आज की पार्वती में आकाश-पाताल का फर्क है। रेयूकाई नामक संस्था सचमुच अच्छी संस्था है, ऐसा लोगों को कहते हुए सुनने पर काफी गर्व महसूस करती हूँ। ऐसी महान् रेयूकाई शिक्षा यूराशिया महाद्वीप में ले आने वाले यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए रेयूकाई शिक्षा को स्वयं कार्यान्वयन कर सदस्यों को भी कार्यान्वयन करने में लगाकर अब आयोजित होने वाले गोहोम्यो आत्माग्रहण समारोह में सहभागी बनकर लोकहितकारी बोधिसत्व बनने की प्रतिज्ञा करती हूँ।

धन्यवाद

- जुन होजाशु श्रीमती पार्वती श्रेष्ठ, यूराशिया रेयूकाई ११वीं शाखा

यूराशिया रेयूकाई छात्रवृति प्रदान कार्यक्रम - २०११ के फोटो न्यूज

यूराशिया रेयूकाई ११वीं शाखा
धोबीधारा, काठमांडू (४ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) ऋतु बेल २) पासंग लमु शेर्पा

यूराशिया रेयूकाई १३वीं शाखा
टीकापुर, कैलाली (१४ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) दीपेन्द्र उपाध्याय २) हिकमत के० सी०

यूराशिया रेयूकाई १५वीं शाखा
कौशलटार, भक्तपुर (६ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) सावित्री कुमारी राम २)अष्ट लोप्चन

यूराशिया रेयूकाई १७वीं शाखा
सिद्धार्थनगर एवं सुनवल (२७ एवं ३० मई २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) एरिका भुषाल २)पूजा गौतम

यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा
सिलीगुड़ी, भारत (१८ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) अन्वेषा गुरूंग २) पेम्बा शेर्पा

यूराशिया रेयूकाई २२वीं शाखा
नवलपरासी (३ व ४ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) राधा ठकुरी २) दुर्गा पोखरेल

यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा
धोबीधारा, काठमांडू (६ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) काजोल शाही २)प्रदीप राई

यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा
भद्रपुर एवं धरान (११ जून २०११)
छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा
१) पूजा काफ्ले २) सुशीला शर्मा

"प्रातः आशा लेकर जगें, दिन में प्रफुल्लित होकर प्रयास करते हुए जीवनयापन करें और रात को कृतज्ञ होकर सोने जाएं।"

- यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा

यूराशिया रेयूकाई द्वारा सम्पन्न किए गए विभिन्न क्रियाकलापों की झलकियां:

यूराशिया रेयूकाई ११वीं शाखा, म्योईचिकाई बाल-मिलन
(७ जनवरी २०१२, धोबीधारा, काठमांडू)

यूराशिया रेयूकाई १३वीं शाखा, साधारण सदस्य-मिलन
(५ नवम्बर २०११, सुखड, कैलाली)

यूराशिया रेयूकाई १५वीं शाखा, बाल-मिलन कार्यक्रम
(८ अप्रैल २०११, कौशलटार, भक्तपुर)

यूराशिया रेयूकाई १७वीं शाखा, नववर्ष स्वागत कार्यक्रम
(१ जनवरी २०१२, सिद्धार्थनगर)

यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा, बाल-प्रतिभा कार्यक्रम
(१६ जून २०११, सिलीगुड़ी, भारत)

यूराशिया रेयूकाई २२वीं शाखा, सिलाई-बुनाई प्रशिक्षण
(५ मई २०११, बर्दघाट)

यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा, नववर्ष स्वागत कार्यक्रम
(१ जनवरी २०१२, धोबीधारा, काठमांडू)

यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा, निःशुल्क नेत्र-चिकित्सा शिविर
(२२ नवम्बर २०११, केरखा, झापा)

यूराशिया रेयूकाई बांग्लादेश, सिलाई-कटाई एवं फैब्रिक पेंटिंग प्रशिक्षण
(१६ मई २०११, बांग्लादेश)

यूराशिया रेयूकाई म्यानमार, अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण
(जून २०११, म्यानमार)

यूराशिया रेयूकाई वाराणसी संस्कृति केन्द्र
पर्यावरण संरक्षण दिवस (५ जून २०११, गंगातट, वाराणसी)

यूराशिया रेयूकाई धरान संस्कृति केन्द्र
ब्यूटिशियन प्रशिक्षण, (१६ अगस्त २०११, धरान)

यूराशिया रेयूकाई बुटवल संस्कृति केन्द्र
तीज गीत प्रतियोगिता (१८ अगस्त २०११, बुटवल)

यूराशिया रेयूकाई नेपालगंज संस्कृति केन्द्र
मेहंदी प्रशिक्षण (६ जून २०११, नेपालगंज)

प्रकाशकः

यूराशिया रेयूकाई

५८, डा० पारसमणि सरणी, सिलीगुड़ी, वार्ड नं० ४१
पश्चिम बंगाल, भारत
फोनः ००९१-३५३-२५४४७१६
फैक्सः ००९१-३५३-२५४४६०८

यूराशिया रेयूकाई योजना विकास
प्रकाशन समिति

कृपया इस पत्रिका को स्वयं पढ़कर औरों को भी पढ़ने का मौका दें।